3.

लोक संस्कृति अवधारणा, लोक–वार्ता और लोक–संस्कृति

– प्रो. श्रीमती माग्रेट कुजूर *

सेमेस्टर – IV, प्रश्नपत्र– IV (लोक साहित्य एवं छत्तीसगढ़ी साहित्य), इकाई 01

विश्व की चाहे कोई भी संस्कृति हो, उसकी अपनी एक अलग पहचान व विशेषताएँ होती है, जो कि उस लोक समुदाय से सम्बद्ध होती है। लोक समुदाय में प्रचलित आस्था, विश्वास, कर्मकांड, आचार–विचार, बोली–भाषाएँ, प्रथाएँ, आदि उस समुदाय के सांस्कृतिक वैशिष्ट्य के द्योतक होते हैं। सामान्य जनजीवन में व्यहृत होने वाले धर्म–कर्म, परंपराएँ तथा उनमें प्रचलित क्रिया–कलाप न केवल उन्हें क्रियाशील बनाते हैं, बल्कि उन्हें एकता के सूत्र में बाँधते हैं और उस समुदाय विशेष को एक पृथक सांस्कृतिक पहचान दिलाते हैं। संस्कृति के द्वारा व्यक्ति सामाज व देश का विकास तो होता ही है, साथ ही लोक जीवन इसी बहुरंगी संस्कृति का अतुल्य भंडार होता है। संस्कृति व सामाज आदि काल से एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं। आदिकाल से मानव अन्य प्राणियों से अधिक बुद्वि शक्ति संपन्न है तथा वह अपने कार्यों से समाज के लोगों को अचंभित करता रहा है।

मनुष्य अपने चिंतन, मनन कुशाग्रता एवं रचनाशीलता के कारण सृष्टि के समस्त प्राणियों पर अपना आधिपत्य स्थापित करता रहा है। संस्कृति अध्येताओं के अनुसार हमेशा लोक संस्कृति शिष्ट संस्कृति की

*जन्मतिथि : 26 जून 1977, पिता : श्री मनुएल कुजूर, माता : श्रीमती कांति कुजूर, पति : प्रो0 निरंजन कुजूर, शैक्षणिक योग्यता : एम. ए. (हिन्दी), नेट, सेट, मो. नं. : 9669213973, आवासीय पता : सी. एम. पी. डी. आई कॉलोनी धरमजयगढ़, सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय महाविद्यालय धरमजयगढ़, जिला– रायगढ़ (छ.ग.), मेल आई डी– margreatkujur@gmail.com

सहायक होती है तथा दोनों संस्कृतियों में परस्पर सहयोग व समन्वय अपेक्षित है जो किसी देश के धार्मिक, सामाजिक विश्वासों, क्रियाकलापों व अनुष्ठानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोक संस्कृति हमेशा मानव श्रम की प्रेरणा से सिंचित होती है और प्रकृति की गोद में पल्लवित व विकसित होती है। बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय एवं विश्वबंधुत्व की भावना ही लोक संस्कृति की जीवन स्रोत रही है। लोक संस्कृति, लोक मंगल व लोक कल्याण की भावना पर आधारित होती है अर्थात यह संपूर्ण लोक के कल्याण पर आधारित होती है। लोक संस्कृति हमेशा विकास की ओर अग्रसर होती रहती है तथा इसमें जो रूढ़िवादिता, जड़ता, परंपरावादिता के जो तत्व दिखाई देता है उसमें वास्तव में प्रगतिशीलता व भाव प्रवणता के गुण पाये जाते हैं, जिसका मूल स्रोत आनंद एवं लोक कल्याण की भावना को प्राण तत्व माना जा सकता है। लोक संस्कृति अपने में प्रकृति व मानव के द्वंद्वात्मक संबंधों को संजो कर रखती है।

संसार के सभी देशों में लोक संस्कृति पाई जाती है तथा वहाँ के लोगों का आचार–विचार व रीति–रिवाज ही लोक संस्कृति का उद्‌भव केन्द्र होता है। जो संपूर्ण जन समुदाय के सामूहिक शक्ति का स्रोत होता है। लोक संस्कृति से संपूर्ण समाज की गतिविधियाँ जुड़ी हुई होती है। हर्षकोविट्स के अनुसार संस्कृति पर्यावरण का मानव निर्मित भाग है। संस्कृति जीवन जीने की शैली का नाम है तथा संस्कृति का विकास होने में शताब्दियों का समय लग जाता है। लोक संस्कृति में हमें लोक परंपराओं, लोक गीतों, लोक नृत्यों, लोक नाट्यों, लोक संगीतों, लोक साहित्यों, लोक देवताओं, लोक कलाओं के अनुपम दर्शन होते हैं, जिनके सानिध्य में रहकर मनुष्य अपना और समाज का विकास करता है। समाज में एकरूपता बनाये रखने समाज में प्रचलित व्रत, तीज–त्यौहार, मेले, प्रथाएँ, संस्कार आदि के माध्यम से हममें आपसी भाई चारे, सहिष्णुता एवं उदारता की भावना का विकास होता है। लोक नाट्य लोक संस्कृति का एक अभिन्न अंग है तथा इसे मांगलिक कार्यों, उत्सवों, त्यौहारों आदि अवसर पर नाट्य मंचन एवं अभिनय के द्वारा